International Journal of Humanities and Social Science Invention
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 5 Issue 12||December. 2016 || PP.82-89

''रामायण कृति की पूर्ण समीक्षा''

डा. उर्मिला मीणा
सहआचार्य संस्कृत
महारानी श्री जया महाविद्यालय,
भरतपुर (राज.)

वाल्मीकि अनेक ग्रन्थों के रचयिता है। परन्तु रामयण इनकी प्रथम और सर्वाधिक प्रसिद्ध कृति है। यहाँ उसी की पूर्ण समीक्षा की जायेगी।

रामायण में गायत्री के 24 अक्षरों को आधार मानकर 24 हजार श्लोकों में इसकी रचना की गई है। अर्थात् रामायण के 24 हजार श्लोकों में प्रत्येक सहस्त्र के प्रथम श्लोक का पहला अक्षर उद्धृत करने में गायत्री का मन्त्र बन जाता है।

''प्रतिष्लोके सहस्त्रादौ मन्त्रवर्णाः समुद्घृताः।''[1] (रामायण रहस्य 63)

विद्यारव्य ने वाल्मीकि रामायण के प्रथम सर्ग को भी गायत्री स्वरूप कहा है। ''

''गायत्र्याष्च स्वरूपं तद् रामायणमिति स्मृतम्''।

रामायण तथा उसके लिए प्रयुक्त नामों की सार्थकता जैसा कि ब्रह्मा ने वाल्मीकि को आदेश भी दिया था :–

रामस्य चरितं कृत्स्नं कुरु त्वमृषिसन्तम।[2]
रहस्यं च प्रकाषं च पद् वृत्तं तस्य धीमतः।। (वा.रा. 1/2/32, 83)

महर्षि वाल्मीकि ने भी यही निश्चय किया था कि में समान अक्षर के चार पाद वाले श्लोकों द्वारा सम्पूर्ण रामायण काव्य की रचना करूँगा :–

तस्य बुद्धिरियं जाता महर्षेर्भावितात्मनः[3]
कृत्स्ने रामायणं काव्यमीदृषैः करवाण्यहम्। वा.रा. (1/2/41)

इस रामचरितमय ग्रन्थ के लिए रामायण नाम से अतिरिक्त भी अनेक नाम प्रयुक्त हुए हैं। 1. काव्य 2. महाकाव्य 3. आर्षकाव्य 4. दिव्यकाव्य 5. आदिकाव्य 6. उत्तरकाव्य 7. आख्यान तथा 8. पुरातन इतिहास।

महर्षि वाल्मीकि ने ब्रह्म का आदेश प्राप्त होने पर इस ग्रन्थ की रचना करने का निश्चय किया था। राम का सम्पूर्ण चरित वर्णित होने से इसे महाकाव्य आर्षप्रज्ञा से रचित होने के कारण आर्षकाव्य, भगवान् विष्णु के अवतारभूत श्रीराम का तथा ब्रह्मा–रूद्र सूर्य आदि के आधारभूत जाम्बबान्–हनुमान, सुग्रीव आदि का चरित वर्णित होने से दिव्यकाव्य श्लोकबद्ध सर्वप्रथम रचना होने से तथा परवर्ती रामचरित आधारभूत होने से आदिकाव्य राजयाभिषेक से उत्तरवर्ती श्रीराम चरित का वर्णन होने से सप्तम उत्तरकाण्ड को उत्तरकाव्य, दृष्ट घटनाओं का वर्णन होने से आख्यान और ब्रह्मा–नारद द्वारा प्राचीनकाल में ही रामचरित का वर्णन किये जाने तथा उसी आधार पर रचित होने के कारण इसे पुरातन इतिहास भी कहते हैं। सत्कवियों द्वारा की गई चार प्रकार की रचनाओं में से इसे शास्त्रकाव्य की कोटि में रखा गया है। क्योंकि यह चारों वर्णों को आदेश देने वाला काव्य है।

रामायण का परिमाण और उसके आदि प्रचारकर्ता–

भारतीय परम्परा के अनुसार यह माना जात है कि श्रीराम जन्म से बहुत वर्षों पूर्व रामायण की रचना वाल्मीकि ने की सर्वप्रथम सौ करोड़ श्लोकों में की थी। यह रामायण ब्रह्मलोक में सुरक्षित है इसी का संक्षिप्त रूप 24 हजार श्लोकों वाली प्रचलित रामायण है। इसमें पाँच सौ सर्ग, (छह काण्डो में) सात काण्ड और सौ उपाख्यान बताए गए हैं।

आदिप्रभृति वै राजन् ! पञ्चसर्गषतानि च।[4]
काण्डानि शट् कृतानीह सोन्तराणि महात्मना।। (वा.रा. 7/14/26)

रामायण के सात काण्ड क्रमशः ये है– 1. बालकाण्ड 2. अयोध्या काण्ड 3. अरण्यकाण्ड 4. किष्किन्धकाण्ड 5. सुन्दरकाण्ड 6. युद्धकाण्ड तथा 7. उत्तरकाण्ड।

उत्तरकाण्ड में यद्यपि रामराज्यभिषेक के अनन्तर अगस्त्य आदि ऋषियों के आगमन से लेकर श्रीराम के परमधाम जाने तक की कथाएँ वर्णित है। तथापि भगवान श्रीराम का उत्तर–चरित सीता के परित्याग या उनके रसातल प्रवेश के अनन्तर माना जाता है। इसमें भार्गव वाल्मीकि ने 100 उपाख्यान भी जोडे हैं। जो इलाके आख्यान पर्यन्त वर्णित है।

'उपाख्यानषतं चैव भार्गवेण तपस्विना' (वा.रा., 7/14/25)

रामचरित की रचना कर लेने पर किसके द्वारा इसका प्रचार ऋषि मण्डली में कराया जाय इसकी रचना महिर्ष वाल्मीकि कर ही रहे थे कि कुश–लव दोनों भाइयों ने आकर ऋषि का चरणवन्दन किया। उन्हें योग्य समझकर वेदों के उपवृहणार्थ महर्षि ने उन्हें रामायण पढ़ाई। गान्धर्वो की तरह रूपवान् भगवान् श्रीराम के उन दोनों पुत्रों ने ऋषि ब्रह्मण्ड तथा साधुजनों की सभाओं में रामायण का गान मधुर स्वर में किया। उसे सुनकर मुनियों के नैत्र वाष्प परिपूरित हो गए। अनेक विस्मित होकर उन्हें साधूवाद देने लगे। किसी ने प्रसन्न होकर उन्हें कलश दिया जो किसी ने बल्कल–यज्ञसूत्र–कमण्डलु कौपीन, कुबर– काषायवस्त्र तथा यज्ञभाण्ड भी अर्पित किए। भगवान श्रीराम के अश्वमेघ यज्ञ में जब शिष्यमण्डली के साथ **महर्षि वाल्मीकि** वहाँ पहुँचे तो वहाँ भी महर्षि के आदेशानुसार **कुष–लव** ने **रामायण** का गान राजा–ऋत्विक ब्राह्मण तथा श्रीराम के भी समक्ष किया।

बालकाण्ड तथा उत्तरकाण्ड का सक्षिंप्त होना –

पाश्चात्य विद्वानों में प्रमुख याकौणी तथा उनका अनुसरण करने वाले भारतीय आलोचक भी रामायण के बालकाण्ड तथा उत्तरकाण्ड को प्रक्षिप्त–परवर्ती रचना मानते हैं।

उनके कुछ तर्क इस प्रकार हैं :–

1. नारद द्वारा वाल्मीकि का जो रामायण सुनाई गई उसमें अयोध्याकाण्ड की कथावस्तु से लेकर युद्धकाण्ड तक की ही कथावस्तु का उल्लेख हुआ है।
2. युद्धकाण्ड के अन्त में कुत्तन रामायण का उल्लेख तथा उनके अध्ययनादि का फल–कथन,
3. उत्तरकाण्ड में ही राम को विष्णु के अवतार के रूप में चित्रित करना तथा उससे पूर्व उन्हें मनुष्य के रूप में ही दिखाना आदि।

प्रथम तर्क इसलिए मान्य नहीं है कि नारद द्वारा वर्णित रामायण तो मूलरामायण है। वह वाल्मीकि द्वारा वर्णित रामायण की समग्र कथावस्तु नहीं हो सकती।

दूसरे तर्क इसलिए संगत प्रतीत नहीं होता कि केवल फलश्रुति के आधार पर ही रचना की समाप्ति मान ली जाए तो बालकाण्ड में फलश्रुतिपर्यन्त की रचना को प्रामाणिक कहा जाएगा अन्य ग्रन्थों के मध्य में भी फलश्र?भूति देखी जाती है।

तीसरा तर्क तो ही तथ्यहीन है क्योंकि अयोध्यायकाण्ड के प्रारम्भ में ही कहा गया है कि रावण–वध के लिीए तत्पर देवताओं के प्रार्थना करने पर विष्णु ही राम रूप में अवतरित हुए थे।

तेषामपि महातेजा रामो रतिकरः पितुः।[5]
स्वयंभूरिव भूतानां वभूव गुणवत्तर।।
न हि देवैरूदीर्णस्य रावणस्य वधार्थिभिः।
अर्थितो मानुषे लोके जज्ञे विष्णु सनातनः।। (वा.रा. 2/1/6,7)

उनके अन्य तर्क भी विवेक के परिचायक प्रतीत नहीं होते। उन तर्कों से तो हठवादिता की मनोवृत्ति वक्त होती है क्योंकि बालकाण्ड तथा उत्तरकाण्ड के महर्षि वाल्मीकि द्वारा प्रणीत होने में अन्य अनेक साधक युक्तियाँ दी जा सकती हैं।

रामोख्यान तथा वाल्मीकि रामायण–

महाभारत – वनपर्व में वर्णित रामोपाख्यान के आधार के सम्बन्ध के पाश्चात्यों में चार सम्भावनाएँ व्यक्त की हैं। 1. रामोपाख्या ही रामायण का आधार है। 2. रामोपाख्यान एक ऐसी रामायण पर निर्भर है जो प्रचलित रामायण का पूर्व रूप है। 3. रामोपाख्यान, वाल्मीकि रामायण का संक्षिप्त रूप है तथा[4] रामोपाख्यान एवं रामायण दोनों किसी एक सामान्य मूल स्त्रोत के स्वतन्त्र विकास है।

इन तर्कों के सम्बन्ध में संक्षेपतः इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि रामायण और रामोपाख्यान की कथाओं में अधिकांश साम्य ही हैं। महाभारत के सम्पादन सुकण्ठकर ने भी 86 स्थलों में रामोपाख्यान और रामायण में साम्य दिखाया है इसके साथ ही रामोपाख्यान के इन्द्रजित–यज्ञ काक–वृतान्त आदि विषय रामायण के बिना समझ में नहीं आ सकते।

अतः रामोपाख्यान का वृतान्त स्वतन्त्र नहीं है। महाभारत में रामायण तथा वाल्मीकि का उल्लेख हुआ है। अतः रामोपाख्यान को रामायण का आधार कथमपि नहीं कहा सकता। महाभारत में वायु ही नहीं अग्निदेव की सीता को निर्दोष प्रमाणित करते हैं :–

अग्निरुवाच–

अहमन्तः शरीरस्थो भूतानां रघुनन्दन।[6]
सुसूक्ष्ममपि काकुत्स्य मैथिली नापराध्यति। (मा.भा. 3/275/28)

उक्त चार पक्षों में डा. याकोनी का मत अधिकांश विशेशज्ञ मानते हैं।

काव्य की दृष्टि में वाल्मीकि रामायण का अध्ययन।

काव्य में विवेचनीय कुछ मुख्य विषय ये हैं –

काव्य रचना का प्रयोजन, कथा वस्तु–रस–ध्वनि–अलंकार गुण दोष प्रकृति वर्णन चरित्रचित्रण–कथा का कवित्व शक्ति और उसकी सफलता।

वाल्मीकि रामायण की रचना का प्रयोजन :–

रामायण की रचना का मुख्य प्रयोजन क्रौञ्चवध से मर्माहत महर्षि की आन्तरिक व्यथा को अभिव्यक्त करना है। इस **रामायण** की रचना का आदेश स्वयं ब्रह्मा जी ने दिया था जब वे श्लोकमयी वाणी में निषाद को दिये गये शाप से चिन्तित थे। उनकी यह श्लोकमयी वाणी उस समय मुखरित हुई थी जब तमसा तट पर भ्रमण करते हुए निषाद के वाण से विद्ध तथा रक्त से रञ्जित क्रौञ्च को एवं उसके दुःख में करुण क्रन्दन करती हुई कौञ्ची को देखकर उनके अन्दर करुणा का उदय हुआ था।

रामायण की कथावस्तु :–

देवर्षि नारद द्वारा वाल्मीकि के प्रति वर्णित रामचरित को मूलरामायण कहा जाता है उसके अतिरिक्त भी महर्षि वाल्मीकि ने समयावियोग के बल से अनेक रहस्यमयी चरित्रों का साक्षात्कार किया था वह भी समन्वित रूप में रामायण की कथावस्तु है। मुख्य कथावस्तु तो श्रीराम–सीता का महान समय चरित्र तथा पौलस्त्य रावण का वध ही है। वाल्मीकि रामायण में ही कहा गया है।

काव्यं रामायणं कृत्स्नं सीतायाष्चरितं महत्।[7]
पौलत्स्यवद्यमित्येवं चकार चरितव्रत।। (वा.रा., 1/4/7)

रस समीक्षा

चरितव्रत महर्षि **वाल्मीकि** ने अपने जिस काव्य को वेदों के उपवृहंगार्थ कुश–लव पढ़ाया और उसका ऋषि–मुनि विप्र–सभाओं में गान करने का आदेश दिया, उस काव्य को उन्होंने श्रृंगार–करुण हास्य–रौद्र भयानक तथा वीर आदि रसों से युक्त बताया है।

रसैः श्रृङ्गार–करुण–हास्य–रौद्र–भयानकैः।
वीरादिभी रसैयुक्तं काव्यमेतदगायताम्।। (वा.रा. 1/4/9)

इससे छह रसों का तोशब्दतः ही उल्लेख हुआ है। शेष रसों का बोध ''आदि'' पद से किया जाता है। इस प्रकार आदि पद से वीभत्स और अद्भुत रसों की योजना करने से नव रस–अलङ्कृन काव्य कहा जाता है परन्तु रामायण में कौञ्च वध की घटना से लेकर सीता के रसातल–प्रवेश पर्यन्त करुण रस का प्राद्यान्य है शेष सभी रसों का वर्णन अङ्ग रसों के रूप में किया जाता है।

अलंकार समीक्षा

करुणरसप्रधान तथा अनुष्टुपः वृत्तप्रदान वाल्मीकिरामायण एक गेयमधुर काव्य है। इससे वृत्त अर्थ और पदों में अधिक मनोरमता है। गेय में माधुर्य की वृद्धि के लिए यमक–अनुप्रासादि अलंकारों का भी होना अत्यन्त आवश्यक है। अतः इस गोयमधुर काव्य की श्रीवृद्धि के लिए न केवल अनुप्रास–यमक अलंकारों का ही योजना की गई है कि च सम्भावना–उपमा उत्प्रेक्षा–काव्यालिंग–परिकर–रूपक – स्वभावोक्ति विरोधाभास अर्थान्तिरन्यास भ्रान्तिमान–पर्याय–संकर–निरूक्ति– ऐतिह्य निदर्शन – विशेषोक्ति – लोकोक्ति– अपह्नरित – अनुमान – दृष्टान्त– सहोक्ति – विनोक्ति– विकल्प आदि अलंकारों का भी प्रयोग किया गया है।

अलंकार, सौन्दर्यमात्र का बोधक होता है इसमें किसी भी काव्य को अधिक ग्राह्य माना जाता है। अलंकारों के प्रयोग से वाणी की चारूता बढ जाती है। इसलिए अलंकार–रहित या अस्फुट अलंकार वाले शब्द–अर्थ को जो काव्य मानते हैं। उनके मत में आक्षेप करते हुए कहा गया है कि जो आचार्य अनलंकृति शब्द–अर्थ को काव्य स्वीकार करता है। वह अग्नि को शीतल क्यों नही मान लेता है। अर्थात् अग्नि को शीतल कहना जैसे नितान्त अनभिज्ञता का परिचायक है। इसी प्रकार अनलंकृति शब्दार्थ को भी काव्य मानना अनभिज्ञता का ही परिचायक है।

अङ्गीकरोति यः काव्यं शब्दार्थवनलंकृति।[8]
असौ न मन्यते कस्मादनुष्णमनलं कृती।। (चन्द्रा. 1/8)

ब्रह्म जब रामायण की रचना का आदेश देकर चले गए तब वाल्मीकि ने निश्चय किया कि में करुण रस प्रधान, श्रुतिकटुता आदि दोषों से शून्य मनोरम श्लोकों में रामायण की रचना करूंगा। अलंकार भी मनोरमता के वर्धक होते है। अतः इस काव्य में अनेक अलंकारों का प्रयोग हुआ है। कुछ उदाहरण में इस प्रकार हैं –

ततः स मध्यगतमंषुमन्त ज्योत्तनावितानं मुहुरुद्वमत्रम्।[9]
ददर्ष श्रीमान भुवि भानुमत्रं गोष्ठे वृषं मत्तभिव भ्रमन्तम्।। (वा.रा. 5/5/1)

यमक –

श्रुत्वा वक्तं समग्रं तद् धर्मार्थसहितं हितम्।[10] (वा.रा., 1/3/1)

कथाभिरभिरामाभिराभिरामौ नृपात्मजौ।[11] (1/23/22)

उपमा –

अकर्दममिदं तीर्थ भरद्वाज निशामय।[12]
रमणीयं प्रसन्नाम्बु सन्मनुप्यमनो यथा। (1/2/5)

समुद्र इव निर्वेगो भग्नदंष्ट्र इवोरगः।
उपरक्त इवादित्यः सद्यो निष्प्रमतां गतः।।[13] (1/55/9)

वाल्मीकि रामायण में अलंकारों पर अध्ययन करने वाले कुछ विद्वान तो इसे सर्वालङ्कारालंकृत मानते हैं।

ध्वनि समीक्षा

अलंकार शास्त्र के मान्य आचार्य भानन्दवर्धन ने घ्वनि को ही काव्य माना है। उस काव्य विशेष को ध्वनि कहते हैं जिसमें शब्द अथवा अर्थ तो गौण रहते हैं परन्तु उनसे प्रतीपमान वस्तु ही प्रधान होती है। महाकवियों की वाणी में यह प्रतीयमान वस्तु उसी प्रकार अपना बिलक्षण महत्व रखती है जैसे अङ्गनाओं में स्फुरित होने वाला लावण्य अङ्गो की अपेक्षा अपना स्वतन्त्र महत्व रखता है।

प्रतीयमानं पुनरन्यदेव वस्त्वस्ति वाणीसु महकवीनाम्।[14]

यन्तत्प्रसिद्धावयवातिरिक्तं विभाति लावण्यमिवाङ्गनासु (ध्वन्या। (1/4)

जहाँ व्यङ्ग्य में चमत्कार अतिशय रहता है वहाँ ध्वनि मानी जाती है। इस ध्वनि के 51 भेद तक आचार्यों ने दिये हैं। वाल्मीकिय रामायण में इसके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं –

अथवा वर्तते अत्र वसत्तो यत्र मे प्रिया।15

किं करिष्यति सुश्रोणी सा तु निर्भर्त्सिता। परैः।। (वा.रा. 4/1/49)

यहाँ वसन्त की स्थिति प्रिया के पास बताई गई है। उससे वियुक्त होने के कारण यहाँ विप्रलम्भ श्रृंगार रस ध्वनित हुआ है।

यथाऽहं राधवादन्यं मनसाऽपि न चित्तये।[16]
तथा मे माधवी देवी विवरं दातुमर्हति। (वा.रा., 7/97/14)

करुण ध्वनि –

मा निषाद ! प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वती समाः।[17]
यत्कौञ्चमिधुनादेकमवधीः काममोहितम्।। (वा.रा., 1/2/15)

इस विषय में आनन्दवर्धन में कहा है कि कवि के प्रथमार्ध श्लोक से करुण रस का स्थायीभाव शोक प्रतीयमान है। इससे करुण रस ध्वन्ति होता है। उसके मत में करुण रस ही काव्य की आत्मा है। जैसे आदेकवि वाल्मीकि को कौञ्चद्वन्द्व के वियोग से मर्महित होने पर जो शोक उत्पन्न हुआ वही श्लोक – यश और काव्य के रूप में परिणत हुआ –

काव्यस्याऽऽत्मा स एवार्थस्तथा चाऽऽदिकवेः पुरा।[18]
कौञ्यद्वन्द्व वियोगोत्थः शोकः श्लोकःत्क्मागतः।।

इहादिकविपद्येऽपि प्रथमार्धेन प्रधानतया प्रतीयमान करुणस्थायी शोक एवं जीवितम्। तेनात्र करुण रसो ''ध्वन्यते''। (ध्वन्या, 1/5)

वाल्मीकि रामायण में भी इसे स्पष्ट शब्दों में कहा गया है।

समाक्षरैश्चतुर्मियैः यादैर्गीतो महर्षिणा।[19]
सोऽनुव्याहरणाद् भूयः शोकः श्लोकत्वामागतः।। (वा.रा., 1/2/40)

अर्थात् अतिशयित शोकोत्य के अनन्तर कहे जाने के कारण शोक ही श्लोक हो गया। इससे करुण रस यहाँ ध्वनि है।

एक अन्य उदाहरण में शोक की स्थिरता से करुण रस ध्वनित है।

तं हि चिन्तयमानायाः शोकोऽयं हृदि वर्तते।
नदीनामिव वेगेन समुद्रसलिलं महत्। (वा.रा., 2/62/2/18)

रौद्र रस ध्वनि–

करिष्ये मैथिलीहेतोरपिषाचमराक्षसम्।[20]
मम रोष प्रयुक्तावां सायकानां बलं सुराः।। (वा.रा., 3/64/67)

यहाँ रोष के प्रयोग में रोद्ररस ध्वनित है।

वीररस–

सुग्रीव! कुरुतं शब्दं निष्पतेद् येव वानरः।[21]
थ्जतकाषी जयष्लाघी त्वया चाधर्षित पुरात्।। (वा.रा., 4/14/17)

भयानकरसध्वनि –

अदृष्टपूर्वरूपत्वात् सर्वे ते तव राघव।[22]
रूपं दृष्टाऽपसर्पेयुस्तव सर्वे द्वि विभ्यति।। (वा.रा., 2/29/4)

रसाभासध्वनि –

वामेन सीतां पद्माक्षी मूर्धजेषु करेण सः।[23]
उर्बोस्तु दक्षिणेनैव परिजग्राह पाणिना।। (वा.रा., 3/49/17)

यहाँ सीता के प्रति रावण द्वारा किये गए अनुचित व्यवहार से रसाभास ध्वनित होता है।

वस्तुध्वनि –

तपः स्वाध्यायनिरतं तपस्वी वाग्विदां वरम्।[24]
नारदं परिपप्रच्छ वाल्मीकि मुनिपुङ्गवम्।। (वा.रा., 1/1/1)

यहाँ वाल्मीकि और नारद का जो स्वरूप बताया गया है। उससे यह घोतित होता है। कि शिष्य और आचार्य को इसी प्रकार का होना चाहिए। इस वाक्यगत वस्तु से वस्तु ध्वनित होती है।

अत्यन्तरिरस्कृतवाच्यध्वनि–

रविसंक्रान्त सौभाग्यस्तुषारारुणमण्डलः।[25]
निःष्वासान्ध इवादर्षष्चन्द्रमा न प्रकाषते।। (वा.रा., 3/16/13)

गुण समीक्षा

काव्य में अलंकार तथा गुणों का होना अत्यन्त आवश्यक है। उनमें भी प्रधान है – गुणों का रहना। क्योंकि अलंकार होने पर भी यदि काव्य में गुण नहीं हो तो वह काव्य वस्तुतः काव्य नहीं कहा जा सकता है।

अलंकृतमपि श्रव्यं न काव्यं गुणवर्जितम्।[26]
गुणयोगस्तयोमुख्यो गुणालंकारयोगयोः (सर.क., 1/59)

ये तीन गुण बताए है (का.प्र. 8/88)

माधुर्य गुण–

माधुर्यगुण से श्रृङ्गार रस मे द्रुतता होती है।[27]

आह्लदकत्वं माधुर्य श्रृंङ्गारे दुतिकारणम्। (का.प्र. 8/88

ओज गुण –

इससे दीप्ति तथा चित्र का विस्तार होता है और यह वीर वीभत्स रौद्र रसों में क्रमशः अधिक अभिव्यक्त होता है।

ओजष्चिमन्तस्य विस्ताररूपं दीप्तत्वमुच्यते।28
वीरवीभत्सरौद्रेषु क्रमेणाधिकामस्य तु।। (सा.द. परि. 8)

वाल्मीकि रामायण के वीर–वीभत्स तथा रौद्ररसों के वर्णन में इसकी अभिव्यक्ति हुई है।

प्रसाद गुण –

जैसे अग्नि शुष्क इन्धन को सधः अपने में लीन कर लेता है। उसी प्रकार जो समस्त रसों तथा रचनाओं में चित्र को प्रभावित कर लेता है। उसे प्रसाद गुण कहते हैं।

चिन्त व्याप्नोति यः क्षिप्रं शुष्केन्धनमिवानलः।[29]
स प्रसादः समस्तेषु रसेषु रचनासु व।। (सा.द. परि. 8)

वाल्मीकि रामायण में आनन्दातिशय या हर्ष का संचार करने वाले सरलार्थ के घोतक समास वाले शब्दों से प्रसाद गुण की अभिव्यक्ति हुई है।

दोष समीक्षा

यद्यपि महर्षि वाल्मीकि की प्रतिज्ञा के अनुसार क्षुतिकटुत्व–पतत्प्रकर्षादि दोष रामायण में नहीं होने चाहिए और इस प्रकार रामायण में किन्हीं अन्य काव्य दोषों की सम्भावना करना तथा उनकी समीक्षा करना भी कोई गौरवपूर्ण कार्य नहीं कहा जा सकता।

वर्तमान मान्यता के अनुसार ह्यक्षेषु, केचिच्घोत्र–विवर्जिता, जैसे पदों में श्रुतिकटफत्व मानना ही पडेगा। इसी प्रकार पाणिनीय व्याकरण के अनुसार साधुत्व–असाधुतव की व्यवस्था मानने पर कहीं–कहीं च्युतिसंस्कृति दोष भी कहना ही पड़ता है।

प्रकृतिवर्णन समीक्षा –

सन्ध्या–सूर्य–इन्दु आदि प्रकृति के जिन पदार्थों का वर्णन काव्य में आवश्यक होता है। उन सभी का वर्णन रामायण में प्राप्त है।

इससे सागर हेमन्तादि ऋतु–चन्दोदय–रात्रि–आकाशादि के अतिरिक्त नदी–सरोवर–पर्वत–वन–वृक्षावली–मेघ मण्डल आदि का भी मनोहारी वर्णन किया गया है। रामायण में वर्षा ऋतु का जितना सजीव और गम्भीर है। उतना

श्रीमद्भागवत आदि में नहीं है। क्योंकि वर्षा ऋतु में जितनी घटनाएँ होती हैं उनको रामायण में भगवान् श्रीराम स्वयं देखते हैं और इस प्रकार सीता के वियोग से आन्तरिक व्यथा उन्हें हुई उसका अनुभव पूर्ण वर्णन किया गया है।

स्वयं भगवान् श्रीराम के द्वारा कहे गए इस वचन से ही यह भाव परिलक्षित होता है– लक्ष्मण ! ऐसी इच्छा होती है कि पद्मकोश के आसक्त कोमल पल्लवो को देखता ही रहूं क्योंकि उनकी शोभा सीता के नैत्र कोशो की तरह हैं–

पद्मकोयपलाषनि द्रष्टुं दृष्टिर्हि मन्यते।[30]
सीताया नैत्रकोषाभ्यां सदृषानीति लक्ष्मण। (1/4/1/71)

पम्पा सरोवर तथा मन्दाकिनी नदी के प्राकृतिक सौन्दर्य को देखकर श्रीराम इतने भावविभोर हो जाते हैं। और कहने लगते हैं – लक्ष्मण ! यदि सीता के साथ हमें यहाँ निवास करने का सुअवसर प्राप्त हो जाए तो में इन्द्र अथवा अयोध्या के भी ऐश्वर्य को प्राप्त करने की कामना न करूँ :–

यदि दृष्येत सा साध्वी यदि चेह वसेमद्वि।
स्पृहयेयं न शक्राय नायोध्यायै रघुन्तम ! ।। (4/1/96)

चरित्र–चित्रण समसीक्षा

रामायण का कोई भी पात्र हीनसत्व वाला या शूद्र कार्य करने वाला नहीं है। नायक श्रीराम तथा उनसे सम्बन्ध समुद्र वशिष्ठ–विश्वामित्र–दशरथ–सुमन्त– भारद्वाज, अगस्त्य–अत्रि, सुग्रीव–हनुमान–अंगद–जाम्बवान, भरत–लक्ष्मण–शत्रुध्न आदि तो अपने लोकोत्तर महनीय कार्यकलापों से सर्वत्र यशस्वी और आदर्श माने जाते हैं। स्त्री पात्रों में नायिका सीता, कौशल्या, अनुसूया, तारा, मन्दोदरी आदि तो अपने रूप सौन्दर्य विशिष्ट चरित के कारण देव ऋषियों द्वारा भी प्रसंशनीय और वन्दनीय हैं।

इन सभी पात्रों में दशरथ का चरित्र कितना उदात्त और स्पृहनीय हे कि उन्होंने पुत्र श्रीराम में वियुक्त होने पर अपने प्राण ही छोड दिये। जीवित रहने पर भी माता कौशल्या का चरित उससे कम महत्वपूर्ण नहीं है। जिनके विषय में सीता ने कहा है कि मुझे केवल तपस्विनी माता कौशल्या के लिए ही दुःख है। और मैं उन्हीं का स्मरण कर जीवित हूँ। इसी प्रकार भरत का चरित भाइयों में आदर्श माना जाता है। पुत्रों में श्रीराम का तथा मित्रों में सुग्रीव का चरित अनुपम है।

सूर्यरूप श्रीराम के पीछे दिवस की तरह वन स्थल जाने वाले लक्ष्मण के मूच्छित हो जाने पर शोक करते हुए श्रीराम कहते हैं कि प्रत्येक देश में कलत्र–बन्धन मिल जाते हैं परन्तु ऐसा देश देखने को नहीं मिलता, जहाँ सहोदर भ्राता सुख दुख में एक साथ रहते हो।

देषे देषे कलत्राणि देषे देषे च बान्धवाः।
तं तु देषं न पश्चामि पत्र भ्राता सहोदरः।। (6/102/14)

सुग्रीव के सचिव और श्रीराम के अनन्य सेवक हनुमान का चरित इतना अधिक प्रशंसनीय है कि भगवान् श्रीराम ने स्वयं इनके समुद्रोल्लघन और सीता की खोज कार्यों के सम्बन्ध में कहा कि इनके अतिरिक्त पृथ्वी पर अन्य कोई भी वीर इन कार्यों को नही कर सकता है ऐसा कहते हुए उन्होंने हनुमान का सर्वस्वभूत आलिङ्गन किया। रावण वध के अनत्तर अशोकवाटिका में बैठी हुई सीता को जब यह सूचना दी कि रावण का वध हो गया और श्रीराम भी विजय हुई उस समय सीता मौन हो गई बाद में अपने मौन का स्पष्टीकरण करते हुए उन्होंने हनुमान से कहा कि इस प्रकार के प्रिय–सन्देश की समानता स्वयं विविध रत्न या तीनों लोकों के राज्य से भी नहीं की जा सकती है। अतः मुझे विचार करने के बाद भी ऐसी कोई वस्तु समझ में नहीं आ रही है। जो मैं तुम्हें इस प्रिय सन्देश के बदले देकर खुशी हो सकूं –

न हि पश्चामि सद्वषं चिन्तयत्ती प्लवङ्गम।
आख्यानमस्य भवतो दातुं प्रत्यभिनन्दनम्।।
न च पष्चामि सदृषं पृथिव्यां तव किचन।
सदृषं मत्प्रियाख्याने तव दत्वा भवेत्सुखम्।
हिरण्यं वा सुवर्ण वा रत्नानि विविधानि च।।
राज्यं वा त्रिसु लोकेषु एतन्नर्हति भाषितम्।। (6/115/18–20)

शक्ति मति–धृति और उत्साह ये चारों गुण उतने परिणाम में किसी अन्य वीर मैं नहीं देखे जा सकते जितने परिणाम में हनुमान में विद्यमान हैं।

आदि काव्य रामायण के विषयों की समीक्षा यहाँ तक ही हुई है।

संदर्भ –

1. रामायण रहस्य, 63
2. वाल्मीकि रामायण, 1/2/32, 33
3. वाल्मीकि रामायण, 1/2/41
4. वाल्मीकि रामायण, 7/14/26
5. वाल्मीकि रामायण, 2/1/6.7
6. महाभारत, 3/275/28
7. वाल्मीकि रामायण, 1/4/71
8. चन्द्रा, 1/8
9. वाल्मीकि रामायण, 5/5/1
10. वाल्मीकि रामायण, 1/3/1
11. वाल्मीकि रामायण, 1/23/22
12. वाल्मीकि रामायण, 1/2/5
13. वाल्मीकि रामायण, 1/55/9
14. ध्वन्यालोक, 1/4
15. वाल्मीकि रामायण, 4/1/49
16. वाल्मीकि रामायण, 7/97/14
17. वाल्मीकि रामायण, 1/2/15
18. ध्वन्यालोक, 1/5
19. वाल्मीकि रामायण, 2/62/18
20. वाल्मीकि रामायण, 3/64/67
21. वाल्मीकि रामायण, 4/14/17
22. वाल्मीकि रामायण, 2/29/4
23. वाल्मीकि रामायण, 3/49/17
24. वाल्मीकि रामायण, 1/1/1
25. वाल्मीकि रामायण, 3/16/13
26. सर. क., 1/59
27. का. प्रकाश, 8/88
28. सा.द.परि., 8
29. सा.द.परि., 8
30. वाल्मीकि रामायण, 4/1/71